http://www.rtuonline.com

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न–पत्र (प्राचीन काव्य)

Time allowed : Three hours **Maximum Marks : 100**

- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) नरवर देश, सुहाँमणउ जइ जावउ पहियाह।
मारू तणा सँदेसड़ा ढोलइनूँ कहियाह।।
संदेशा ही लख लहइ, जउ कहि जाणह कोई।
ज्यूँ धणि आखइ नयण भरि, ज्यँउ जइ आखइ सोई।।

http://www.rtuonline.com

ma9300930012@gmail.com

Whatsapp @ 9300930012
Your old paper & get 10/-
पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

PTO

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

ढाढी, एक सँदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ।
सा धण बलि कुइला भई, भसम ढँढोलिसि आइ।। 10

अथवा

बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहित काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज–खोरी।।
काहे कौ हम ब्रज–तन आवतिं, खेलति रहति आपनी पौरी।
सुनत रहतिं स्त्रवननि नँद–ढोटा, करत–फिरत माखन–दधि–चोरी।।
तुम्हरौ कहा चोरि हम लै हैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी।। 10

(ख) हरि बिन कौर सहाई करैगा।
जौ ऐसौ औसर बिसरैगो, तो मरकटकौ औतार धरैगो।।
करम डोरि बाजीगर कै बसि, नाचन धरि–धरि बार फिरैगौ।
ल लुटकी तौहि त्रास दिषावै, जन जन कै तू पाई परैगौ।।
ज्यूं हमाल सिरि बोझ बहत है, लालच कै संगि लागि मरैगौ।
ज्यूं कृलाल चक्री कूं फेरै, ऐसे तु कई बार फिरैगौ।।
भजि भगवंत मुक्ति के दाता, राम कहया कछुना बिगरैगौ।
नांव प्रताप राषि उर अंतर, नामदेव सरनै उबरैगौ। 10

अथवा

दुलहनी गावहु मंगलाचार।
हम घरि आए हो राजा राम भरतार।।
तन रत करि मैं मन रत करिहूँ, पंचतन्त्र बराती।
राँमदेव मोरैं पाँहुनैं आये मैं जोबन मैं माती।।
सरीर सरोवर बेदी कहिहूँ, ब्रह्मा वेद उचार।
राँमदेव सँगि भाँवरी लैहूँ, धनि–धनि भाग हमार।।
सुर तेतीसूँ कौतिग आये, मुनिवर सहस अठयासी।
कहै कबीर हँम ब्याही चले हैं, पुरिष एक अबिनासी।। 10

(ग) कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयु गुनि।।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही।।
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा।।
भए बिलोचन चारू अचंचल बहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल।। 10

अथवा

बरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ।
सुनो री सखी तुमसों या मन की, साँची बात कहूँ।
साधु संगति करि हरि सुख लेऊँ, जगतैं हौं दूरि रहूँ।
तन मन धन मेरो सब ही जावो, भल मेरो सीस लहूँ।
मनु मेरो लागो सुमिरन सेती, सबको मैं बोल सहूँ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सतगुरू शरण गहूँ। 10
"मीरा की विरह वेदना अनुभवजन्य है।" कथन की समीक्षा कीजिये।

http://www.rtuonline.com
http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

(शब्द–सीमा : 500 शब्द) 20

अथवा

"नागमति का विरह–वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।" इस कथन को जायसी के विरह–वर्णन के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

(शब्द–सीमा : 500 शब्द) 20

3. " 'ढोला मारू रा दूहा' में लोक–जीवन की सफल अभिव्यक्ति हुई है।" इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये। (शब्द–सीमा : 500 शब्द) 20

अथवा

"कबीर कवि की अपेक्षा समाज–सुधारक अधिक थे।" इस कथन की सप्रमाण मीमांसा कीजिये। (शब्द–सीमा : 500 शब्द) 20

4. "सूरदास वात्सल्य और श्रृंगार रस के श्रेष्ठ कवि हैं।" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में सूर के वात्सल्य और श्रृंगार रस का वर्णन कीजिये।

(शब्द–सीमा : 500 शब्द) 20

अथवा

रज्जब की भक्ति–भावना पर प्रकाश डालिये। (शब्द–सीमा : 500 शब्द) 20

5. (क) काव्य गुण किसे कहते हैं? परिभाषित करते हुए कोई दो गुणों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये। 4

अथवा

शब्द शक्ति के भेद बताते हुए किन्हीं दो का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये। 4

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं तीन अलंकारों को लक्षणों तथा उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिये: 6

(1) उपमा (2) अनुप्रास (3) यमक (4) स्वभावोक्ति
(5) रूपक (6) अतिशयोक्ति (7) उदाहरण

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं दो छन्दों के लक्षण उदाहरण सहित लिखिये। 6

(1) गीतिका (2) हरिगीतिका (3) रोला
(4) मन्दाक्रान्ता (5) सोरठा।

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com